International Journal of Pharmaceutical Research and Applications
Volume 5, Issue 2, pp: 792-793 www.ijprajournal.com ISSN: 2249-7781

शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधान की सार्थकता

डॉ रवींद्र नाथ सिंह

Date of Submission: 15-12-2020 Date of Acceptance: 25-12-2020

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालकों के व्यवहार में परिवर्तन करना है। शिक्षक क्रिया द्वारा इस उद्देश्य की प्राप्ति की जाती है। दुनिया भर में स्कूली शिक्षा में होने वाले शोधों में तेजी से वृद्धि हुई है। इसके चलते सीखने सिखाने की प्रवृत्ति को समझने में काफी मदद मिली है। इस कड़ी में क्रियात्मक शोध एक नई शोध विधा के रूप में उभर कर सामने आया है। क्रियात्मक शोध के माध्यम से शैक्षिक कार्य संपादन में संलग्न शिक्षाविदों से लेकर शिक्षकों तक शिक्षकों तक को अपनी समझ के साथ साथ अपने प्रयासों में व्यवस्थित तरीके से सुधार लाने का अवसर प्राप्त हुआ है। सुधार लाने का अवसर प्राप्त हुआ क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षक की समस्याओं के समाधान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण है। इसके अंतर्गत शिक्षक को समस्याओं का वैज्ञानिक विधि से समाधान खोजा जाता है जिससे शिक्षण में वांछित सुधार लाया जा सके।

क्रियात्मक अनुसंधान का तात्पर्य एक ऐसी वैज्ञानिक खोज से है जिसका संबंध शिक्षा के क्रियात्मक पक्ष से होता है। इसके द्वारा विद्यालय की कार्यप्रणाली की समस्याओं का अध्ययन वस्तुनिष्ठ रुप से किया जाता है। क्रियात्मक अनुसंधान की प्रक्रिया समस्या केंद्रित होती है। इसका उद्देश्य ना तो शोध प्रबंध लिखना होता है और ना ही उपाधि प्राप्त करना । इसका उद्देश्य विद्यालय की कार्यप्रणाली का समस्या का समाधान करके उसमें सुधार एवं परिवर्तन लाना है। किसी भी व्यवस्था के भली प्रकार संचालन के लिए इसके सदस्य ही उत्तरदाई होते हैं उनके समक्ष समस्याएं आती हैं, उसकी गहनता को कार्यकर्ता ही भली प्रकार समझ सकता है। अतः कार्यकर्ता को कार्यप्रणाली की समस्या के चयन करने तथा उसके समाधान ढूंढने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए तभी वह अपने कार्य कौशल का विकास कर सकता है। कार्यकर्ता द्वारा स्वयं की कार्यप्रणाली की समस्या का चयन करने का उसका वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने एवं समाधान ढूंढ कर वर्तमान क्रिया में सुधार करने की प्रक्रिया को क्रियात्मक अनुसंधान कहते हैं।

क्रियात्मक अनुसंधान, विद्यालयों की कार्य पद्धति में सुधार एवं विकास करने का एक सफल साधन है। इसके माध्यम से शिक्षक अपनी कक्षा तथा विद्यालय की समस्याएं सुलझाने का प्रयास करता है। आज शिक्षा के क्षेत्र में नए नए अनुसंधान हो रहे हैं जिनका उद्देश्य शिक्षा को उत्तम बनाना और शिक्षा संबंधी समस्याओं को दूर करना है। क्रियात्मक अनुसंधान एक रूप शैक्षिक अनुसंधान भी है। शिक्षक परिस्थितियों में किए जाने वाले अनुसंधान को शैक्षिक अनुसंधान कहते हैं। जिनका ध्येय छात्रों- शिक्षकों अभिभावकों तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं का विकास करना तथा उन्हें अधिक योग्य सबल और सक्षम बनाना होता है। शिक्षा में अनुसंधान की प्रक्रिया को गति प्रदान करता है।

अनुसंधान का एक रूप शैक्षिक अनुसंधान भी है शिक्षक परिस्थितियों में किए जाने वाले अनुसंधान को शैक्षिक अनुसंधान कहते हैंजिनका धेय छात्रों शिक्षकों अभिभावकों तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया ओं का विकास करना तथा उन्हें अधिक योग्य सबल एवं सक्षम बनाना होता है। ट्रैवर्स के अनुसार-" शैक्षिक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास करती है।" शैक्षिक अनुसंधान दो भागों में बांटा जाता है-

1. मौलिक/आधारभूत/ मूल अनुसंधान
2. क्रियात्मक अनुसंधान(प्रयोगात्मक)

शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान एक कारगर साधन के रूप में प्रचलित है इसकी शुरुआत सामाजिक मुद्दों पर शोध कर रहे कर्ट लेविन इन (1946) से मानी जाती है। क्रियात्मक अनुसंधान को शिक्षकों ने स्वयं की क्षमता संवर्धन के प्रभावी साधन के रूप में देखा और स्वीकार किया है। क्रियात्मक शोध का एक लाभ यह भी है कि इसके द्वारा शिक्षक अपने परिवेश के अनुरूप शिक्षण विधि का निर्माण कर सकते हैं।

क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा-

अनुसंधान वह अनुसंधान है जिसका प्रयोग अध्यापक अपनी शिक्षा में सुधार के लिए करते हैं। गुड के अनुसार-" क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षकों, निरीक्षकों एवं प्रशासन द्वारा अपने कार्यों एवं नियमों की गुणात्मक उन्नति के लिए प्रयोग किया जाने वाला अनुसंधान है।" जोहन इलियट ने क्रियात्मक शोध की व्यापक परिभाषा करते हुए कहा है –" क्रियात्मक शोध एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अध्यापक अपनी कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं का आकलन करता है तथा बेहतर बनाता है अपितु इस संबंध में अपने स्तर के नए सिद्धांत भी बना रहा होता है। यही सिद्धांत प्रभावी होने पर पुराने सिद्धांतों का स्थान ले लेते हैं"।

एनसीईआरटी द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना हेतु निम्नांकित सोपान विकसित किए गए हैं जिनका प्रयोग क्रियात्मक अनुसंधान परियोजना का प्रारूप बनाने के लिए किया जा सकता है-

1. क्रिया अनुसंधान परियोजना का शीर्षक
2. योजना का मुख्य एवं एवम गौड़ उद्देश्य
3. परियोजना की कार्यप्रणाली
4. परियोजना कार्य प्रणाली की क्रियान्यवन योजना
5. परियोजना कि मूल्यांकन व्यवस्था
6. परियोजना के लिए बजट प्रारूप
7. विद्यालय के नाम, कक्षा एवं वर्ग तथा छात्रों की संख्या, जहां अनुसंधान किया जाना है
8. विभिन्न विषयों में शिक्षकों की संख्या
9. विद्यालय में परियोजना कार्य के लिए उपलब्ध सुविधाएं
10. परियोजना की संभावित क्रियान्वयन(Implication)

International Journal of Pharmaceutical Research and Applications
Volume 5, Issue 2, pp: 792-793 www.ijprajournal.com ISSN: 2249-7781

क्रियात्मक अनुसंधान के उद्देश्य-

क्रियात्मक शोध अपने कार्य प्रणाली को बेहतर बनाने और उसमें सुधार करने को सतत प्रक्रिया है, इस प्रक्रिया का उद्देश्य शिक्षक के कार्य के दौरान आ रही किसी समस्या का समाधान करना वह अपनी कार्यप्रणाली को सुधार करना है। इसके माध्यम से शिक्षक उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जो उन्हें समस्या के रूप में दिखते हैं जिनका वे समाधान चाहते हैं। शिक्षकों के द्वारा किए जाने वाले क्रियात्मक शोध के विविध उद्देश्य होते हैं जिनमें से कुछ इस प्रकार है-

1. शिक्षा को बेहतर और प्रभावी बनाने के लिए
2. शिक्षण-अधिगम विधियों को बेहतर बनाने के लिए
3. विषय-विशेष से संबंधित समस्या के समाधान के लिए

क्रियात्मक अनुसंधान के महत्व–

शिक्षा के क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान के लिए क्रियात्मक अनुसंधान किए जाते हैं। इससे कक्षा या विद्यालय की दैनिक गतिविधियों, क्रियाकलापों और समस्याओं का अध्ययन एवं निराकरण करने में सहायता मिलती है। यह विद्यालय एवं कक्षा की कार्य परिस्थितियों में सुधार लाता है। छात्रों शिक्षकों तथा प्रशासकों में वैज्ञानिक विधियों का विकास करता है। क्रियात्मक अनुसंधान छात्रों के निष्पादन स्तर और आकांक्षा स्तरों में वृद्धि करता है। इसका उद्देश्य कक्षा एवं विद्यालय की कार्यप्रणाली एवं स्थित में प्रगति सुधार एवं गुणात्मक परिवर्तन लाना होता है। यह विद्यालय के शिक्षकों आदि को अपने उत्तरदायित्व को प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनाता है और उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करता है। क्रियात्मक अनुसंधान के अनुप्रयोग के माध्यम से छात्रों की योग्यता व उपलब्धि में वृद्धि होती है इसकी सहायता से अधिक अधिकतम और प्रभावशाली बनाने के लिए नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग कर सकते हैं किंडर गार्डन आदि विधियों का क्रियात्मक अनुसंधान की ही देन है।

अतः क्रियात्मक अनुसंधान का लक्ष्य विद्यालय की प्रगति तथा विकास करना होता है। यह कक्षा और विद्यालयों में प्रतिदिन उठने वाली समस्याओं का समाधान है यह शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन लाने या तेजी से विकास करने का एक प्रयास है जिसमें समस्या का हल अपेक्षाकृत शीघ्र होता है।

ग्रंथ सूची

1. सुनीता चौहान- (क्रियात्मक अनुसंधान)-- शोध पत्र जनरल ऑफ रिसर्च , एनालिसिस एंड डेवलपमेंट (फरवरी 2016) पेज 25
2. सिंघल, अनुपम और यस. पी. कुलश्रेष्ठ 2014- शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा
3. -httbt /www.basic shikshakarivar.com/2015/07 Action research.